इकाई 14 ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 बहुसंस्कृतिवाद के समकालीन संकट

14.4 ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद

14.5 "ऑस्ट्रेलियाई" बहुसंस्कृतिवाद

14.6 सारांश

14.7 अभ्यास

14.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

बहुसंस्कृतिवाद के विचार का जन्म संभवतः 1960 के दशक में न्यूयार्क में हुआ था जब यह देखा गया था कि अनेक आप्रवासी नृजातीय तथा नस्लवादी समूह वास्तविक अर्थों में अमेरिकी 'बर्तन' में 'गल' नहीं रहे हैं। श्वेत-यूरोपियों के विभिन्न नृजातीय और नस्लीय समूहों ने अपनी विशिष्ट नृजातीय विशेषताएँ स्थापित की हैं। इसके अलावा, चूंकि एशिया और लैटिन अमेरिका से गैर-श्वेत आप्रवासियों की संख्या में वृद्धि होनी आरंभ हो गई, उन्होंने 'सम्मिलनकरण' (assimilation) को कठिन पाया। इन सबसे ऊपर अफ्रीकी-अमेरिकी लोग सदैव ही 'गलाने वाले बर्तन' से बाहर ही रहे। संक्षेप में, मेज़बान समाज में पूरी तरह सम्मिलित होने के लिए अनेक समूहों की ओर से 'सम्मिलनकरण' तथा साथ ही प्रतिरोध की नीतियों के बारे में अनेक सीमाएँ थीं।

यही वह समय है जब बहुसंस्कृतिवाद का विचार तथा नीतियों का जन्म हुआ। 1970 के दशक में, कनाडा तथा ऑस्ट्रेलिया ने स्वयं को बहुसांस्कृतिक राष्ट्रों के रूप में घोषित कर दिया जिनके विभिन्न नृजातीय समूहों को उनकी विरासतों का अनुरक्षण करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। 1980 के दशक के अंत तक, बहुसंस्कृतिवाद पश्चिमी यूरोप तक पहुँच गया जहाँ समाज मुख्य रूप से अफ्रीका तथा एशिया से होने वाले आप्रवासन के परिणामस्वरूप होने वाले सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवर्तनों के दौर से गुजर रहे थे।

आपके लिए यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि इन सभी देशों ने आप्रवासन द्वारा डाली गई सांस्कृतिक विविधताओं को उनके समाजों की एक स्थाई विशेषता के रूप में मान्यता प्रदान करके उन्होंने अपने स्वयं के मॉडल विकसित किए हैं। 1990 के दशक की समाप्ति तक, आप्रवासी तथा गैर-आप्रवासी दोनों ही समाजों द्वारा बहुसंस्कृतिवाद के विचार को अपना लिया

गया था; तथा यह स्थिति इस सीमा तक थी कि प्रतिष्ठित अमेरिकी विद्वान नाथन ग्लेज़र (Nathan Glazer) ने यह घोषणा की कि "हम सभी अब बहुसंस्कृतिवादी हैं"।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आपः

- ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद द्वारा सामना किए जा रहे वर्तमान संकट का वर्णन कर सकेंगे;
- ऑस्ट्रेलिया में मुख्य बहुसांस्कृतिक नीतियों की व्याख्या कर सकेंगे; और
- ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद तथा इसके विभिन्न पहलुओं पर चर्चा को समझ सकेंगे।

14.3 बहुसंस्कृतिवाद के समकालीन संकट

इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक की शुरुआत में, बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा तथा नीतियाँ, दोनों ही ख़तरे में आ गई हैं। यह कहा जा रहा है कि बहुसंस्कृतिवाद 1980 और 1990 के दशकों की 'सनक' थी, तथा 21वीं शताब्दी के विश्व में इसके लिए कोई स्थान नहीं है। तो बहुसंस्कृतिवाद के व्यवहार्यता तथा व्यावहारिकता के बारे में अनुमति के पीछे क्या कारण हैं?

इसके लिए अनेक कारण दिए जा सकते हैं परन्तु इनमें चार महत्वपूर्ण हैं जिनका प्रायः जिक्र किया जाता हैः (i) यह तर्क दिया गया है कि सांस्कृतिक वैश्वीकरण की प्रक्रिया, जिसे कि प्रौद्योगिकीय क्रांति से समर्थन प्राप्त हुआ है, पाश्चात्य समाजों में अपनी प्रधानता और बहुमत स्थापित कर रहा है तथा वे बहुसंस्कृतिवाद को नकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। वे आप्रवासियों को, जो कि अब अधिकांशतः विकासशील विश्व से हैं, इस रूप में देखते हैं कि जैसे वे उनके समाज की पाश्चात्य संस्कृति के लिए एक ख़तरा हैं। (ii) नृजातीयता के विरुद्ध विशेष रूप से धार्मिक अल्पसंख्यकों के और इनमें भी मुसलमानों के विरुद्ध जनसाधारण की प्रतिक्रिया 11 सितम्बर, 2001 को विश्व ट्रेड सेंटर पर हुए आतंकवादी हमले के बाद से नकारात्मक बन गई है। सरकारें आप्रवजन की गहन जाँच कर रही हैं तथा नृजातीय अल्पसंख्यकों को संदेह से देख रही हैं, मानो वे सुरक्षा के लिए एक बड़ा ख़तरा हों। 1990 के दशक के बाद से अनेक नृजातीय युद्धों में विस्थापित वित्तपोषण के तथा अलगाववादियों और उग्रवादियों के आंदोलन के लिए राजनीतिक समर्थन का स्रोत बन गए हैं। (iii) विविधता को मान्यता प्रदान करने वाली राजनीति के बारे में पश्चिम समाजों में बढ़ते हुए संदेह का एक बड़ा कारक सैम्युल हंटिंगटन का कार्य भी है, जिसने यह विश्लेषण किया कि विश्व में सांस्कृतिक खण्ड तथा संस्कृतियों के बीच संभावित टकराव शामिल है। उसके दृष्टिकोण में, ऑस्ट्रेलिया जैसे देश में जोकि सांस्कृतिक खण्डों के भौगोलिक पर है, विशेष रूप से सांस्कृतिक युद्ध होने की आशंकाएँ अधिक हैं। (iv) विद्वानों ने भी बहुसंस्कृतिवाद के विरुद्ध बढ़ती हुई आलोचना को पश्चिमी कोसाइरियों में बढ़ती हुई गरीबी और बेरोज़गारी की दीर्घकालिक प्रवृत्तियों से संबद्ध किया है। पाश्चात्य देशों में भी लगभग पिछले दो दशकों में बाज़ारोन्मुख आर्थिक पुनर्गठन हुए हैं; वे इसे

आर्थिक ऑस्ट्रेलिया में आर्थिक "यौक्तिकीवाद" की संज्ञा देते हैं। आर्थिक उदारीकरण के साथ, राष्ट्रों ने सामाजिक कल्याण नीतियों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में धीरे-धीरे कमी कर दी। वे लोग जो आर्थिक पुनर्गठन द्वारा बुरी तरह प्रभावित हैं, गरीबी, आय संबंधी असमानता तथा शहरों में बढ़ते अपराध और हिंसा के लिए आप्रवासियों को दोषी ठहराते हैं।

उपर्युक्त में से कोई भी कारण शैक्षिक तथा वैज्ञानिक और वैज्ञानिक संवीक्षा या जाँच नहीं करता है। कुछ धार्मिक उन्मादियों द्वारा आतंकवादी घटनाओं को अंजाम देने के लिए बहुसंस्कृतिवाद को दोषी ठहराना कपटपूर्ण है। ऐतिहासिक दृष्टि से, ऐसा नहीं हुआ है कि किसी जल से घिरे स्थानों में सभ्यताएँ जीवित न रह पाई हों तथा उन्हें इन स्थानों में रहने के रूप में समझा न जा सका हो। इसी प्रकार, यह माना जाता है कि आप्रवासी लोग अपने साथ नए कौशल लेकर आए हैं, उन्होंने संपत्ति का सृजन किया और "प्राचीन" समाजों में उन्हें आर्थिक विस्तार के लिए अपरिहार्य माना गया था; अतः उन्हें रात ही रात में आर्थिक बोझ के रूप में नहीं माना जा सकता है।

संक्षेप में, विविधताओं को मान्यता प्रदान करने के सिद्धांत तथा नीतियों पर प्रश्न किए जा रहे हैं तथा ऑस्ट्रेलिया सहित उन्हें अनेक देशों में उनकी समीक्षा की जा रही है। यह बात दिलचस्प है कि चूंकि बहुसंस्कृतिवाद पर हमला किया जा रहा है, यह स्पष्ट नहीं है कि इसके स्थान पर क्या चीज रखी जाएगी। बहुसंस्कृतिवाद के विरुद्ध दो विशिष्ट आलोचनाएँ यहाँ महत्त्वपूर्ण हैं: (i) पहले स्थान पर, इसकी अवधारणा की आलोचना की जा रही है। यह तर्क दिया जा रहा है कि बहुसंस्कृतिवाद सामाजिक एकीकरण के विचार के विरुद्ध कार्य करता है; भले ही सामाजिक एकीकरण पदबंध की कितना भी परिभाषित अथवा मोटे तौर पर व्याख्या क्यों न कर ली जाए। (ii) आलोचना का दूसर स्तर व्यावहारिक नीति के स्तर पर है। यह सुझाव दिया जाता है कि जबकि संकल्पनात्मक स्तर पर "बहुसंस्कृतिवाद" और "एकीकरण" को कुछ विद्वानों द्वारा एकीकृत कर दिया गया है, वहीं व्यावहारिक नीति स्तर पर दोनों में पारस्परिक दृष्टि से असंगति है। बहुसंस्कृतिवाद की नीतियों में ग़ैर-एकीकरण तथा हिंसात्मक विवादों का ख़तरा होता है।

उपर्युक्त आलोचनाओं का किस प्रकार जवाब दिया जाए? सबसे पहले, ऐसी आलोचना अत्यंत भटकी हुई होती हैं। बहुसंस्कृतिवाद – एक विचार तथा नीतिगत ढाँचे के रूप में – को अत्यंत विविधतापूर्ण समाजों, जैसे ऑस्ट्रेलिया और कनाडा, में सामाजिक एकीकरण के एक हथियार के रूप में विकसित किया गया था। यदि ऐसे लोग हैं, जो विश्वास करते हैं कि बहुसंस्कृतिवाद का प्रयोग विखण्डीकरण और अत्यधिक विविधता को बनाए रखने के लिए किया जा सकता है, तो यह उनकी भूल है तथा यह अवधारणा इस प्रकार की नहीं है।

बहुसंस्कृतिवाद का प्रयोग किस प्रकार सामाजिक एकीकरण के लिए किया जा सकता है? यहाँ, एकीकरण शब्द को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने तथा इसका अर्थ समझने की आवश्यकता है। एकीकरण सदैव ही किसी चीज के संबंध में होता है, जैसे कि केंद्रीय सांस्कृतिक मूल्यों के सेट के संबंध में। सैद्धांतिक स्तर पर विद्वानों ने कतिपय वैश्विक मूल्यों की पहचान की है,

जिसके इर्द-गिर्द लोकतांत्रिक राजनीति स्वयं को स्थापित करती है और एकीकृत करती है। इनमें से सबसे महत्त्वपूर्ण हैं – समानता और अधिकारों का मूल्य है। ऐसा समाज जो समूहों तथा समुदायों की बुनियादी मानवीय समानता तथा विशिष्ट अधिकारों में विश्वास नहीं करता है, वह उदारवादी लोकतांत्रिक सिद्धांतों के आस-पास राजनीति विकसित तथा संयोजित नहीं कर सकता है। अतः, जब किसी विविध प्रकार के समाज में बहुसंस्कृतिवाद की बात की जाती है, तो सुरक्षित तौर पर ऐसे समाज की कल्पना की जाती हैं, जो उदारवादी लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति वचनबद्ध हो। यदि कोई समाज लोकतांत्रिक मूल्यों से लोकतांत्रिक नहीं है अथवा वह अपसारित नहीं होता है, तो बहुसंस्कृतिवाद की नीतियों के परिणामों का अवांछनीय परिणाम पैदा हो सकता है जैसे, पृथकीकरण, सामाजिक क्रम-परंपरा, तथा नृजातीय शोषण। इस प्रकार, समाज की बुराइयों के लिए बहुसंस्कृतिवाद को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए तथा लोकतंत्र, अधिकारों तथा समानता आदि के व्यवहारों में शामिल हो गई हैं, कमियों की गहन जाँच करनी चाहिए। संक्षेप में, यदि आज लोकतांत्रिक नीतियाँ बहुसंस्कृतिवाद से अलग की जा रही हों, चाहें उसका कारण कोई भी क्यों न हो, तो भी वे अपनी स्वयं की लोकतांत्रिक साख को भी कम कर रही हैं।

बहुसांस्कृतिवाद विभेदों की मान्यता पर सकारात्मक प्रभाव भी डालता है, अतः यह कभी-कभी समाज के मूलभूत संगठन मूल्यों के साथ भी टकराता है। विभिन्न समूह ऐसे मूल्यों पर विश्वास कर सकते हैं तथा उनका अनुपालन कर सकते हैं, जो उनके मूलभूत मूल्यों के विरोध में हों, इस प्रकार, कतिपय परिस्थितियों में, विविधता को बनाए रखने का तात्पर्य होगा समानता, अधिकारों तथा लोकतंत्र के सामान्य मूल्यों को कम करके आँकना। विद्वान लोग उक्त तर्क में प्रमुखता तलाश कर सकते हैं। अतः वे तर्क देते हैं कि बहुसंस्कृतिवाद नीतियों तथा कार्यक्रमों का वैयक्तिक समानता और स्वतंत्रता तथा उदारवादी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के मूल्यों के साथ सम्मिलन किए जाने की आवश्यकता है।

इस आलोचना के संदर्भ में कि बहुसंस्कृतिवाद नीतियों तथा कार्यक्रमों ने विभाजित समाजों को जन्म दिया है, शहरी तनावों तथा हिंसा को पैदा किया है, तथा नृजातीय समूहों के बीच ग़ैर-स्वतंत्रता एवं ग़ैर-लोकतांत्रिक प्रभावों को प्रोत्साहित किया है, भीखू पारेख जैसे विद्वानों का मत है कि मामले की सच्चाई यह है कि पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्रों ने बहुसंस्कृतिवाद को अधिक गहराई से नहीं अपनाया है। एक सांकेतिक स्तर पर केवल विभिन्न संस्कृतियों के उत्सव मनाना और भेदभावों को सहन करना ही काफी नहीं है।

पिछले तीन दशकों में जिस तरीके से पश्चिमी लोकतंत्रों ने बहुसंस्कृतिवाद का संव्यवहार किया है, उसने बहुसंख्यकों के प्राथमिक और आंतरिक मूल्यों पर आधारित सामाजिक पारंपरिक क्रम-बद्धता का सृजन किया है। इसके परिणामस्परूप, नृजातीय तथा सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों ने स्वयं को समाज के अन्य वर्गों की तुलना में कम संख्या में पाया। ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस तथा संयुक्त राज्य जैसे देशों में प्रधानता वाले वर्गों ने यह समझा कि बहुसंस्कृतिवाद उनके लिए नहीं बना है; यह संभवतः कुछ ऐसी चीज है जो आप्रवासियों और नृजातीय अल्पसंख्यकों के लिए बनाई गई है। अल्पसंख्यकों से अपेक्षा की जाती है कि वे प्रमुख संस्कृति में एकीकृत हो जाएँ। प्रमुख

बहुसंख्यकों को यह समझने की आवश्यकता है कि उनके समाज परिवर्तन हो चुके हैं; तथा; केवल बहुसंख्यकों को ही नहीं, उन्हें भी समानता, सहिष्णुता तथा लोकतांत्रिक मतभेद के मूल्यों के इर्द-गिर्द एकीकृत होने की ज़रूरत है। इस प्रकार, विभिन्न लोगों को उदारवादी लोकतांत्रिक मूल्यों और प्रक्रियाओं के इर्द-गिर्द सामाजिक रूप में एकीकृत होना है। एक विशिष्ट मार्ग, जिससे सामाजिक एकीकरण हो सकता है, वह यह है कि बहुसंस्कृतिवाद को विभिन्नताओं की सांकेतिक मान्यता से परे जाना होगा। बहुसांस्कृतिक नीतियाँ तथा कार्यक्रमों द्वारा विभिन्नताओं को वास्तविक रूप में शक्तियाँ प्रदान करने की आवश्यकता है, ताकि विभिन्न सांस्कृतिक समूह उनके अपने नए समाज की संस्थाओं के साथ सहभागिता और साझेदारी के माध्यम से सामाजिक रूप से एकीकृत होने में समर्थ बन सकें।

संक्षेप में, विश्वास की आवश्यकता है और बहुसंस्कृतिवाद को त्यागना अथवा उसे न्यूनतम बनाना नहीं है, परंतु ऐसा कुछ है जिसे विल काइम्लिका ने "उदारवादी" बहुसंस्कृतिवाद की संज्ञा दी है। सार्वजनिक संस्थाओं का कर्त्तव्य है कि वे किसी लोकतांत्रिक-संविधान के व्यापक ढाँचे द्वारा मार्गदर्शित और नियंत्रित नृजातीय-सांस्कृतिक विविधताओं को समायोजित करें तथा इसमें वैयक्तिक अधिकारों, गैर-भेदभाव और सहिष्णुता का दृढ़ रूप से संरक्षण करें। नागरिकता तथा बहुसांस्कृतिक राष्ट्रीय पहचान को प्रोत्साहित करने के लिए बहुसंस्कृतिवाद को वृहत नीतियों के साथ सम्मिलित किए जाने की आवश्यकता है। राज्य के लिए इस बात की आवश्यकता है कि वह अपने नागरिकों को बहुसंस्कृतिवाद के लाभों के विषय में आश्वस्त करें; तथा, साथ ही साथ, बहुसंस्कृतिवाद द्वारा पैदा होने वाले तनावों का एक संवैधानिक लोकतांत्रिक तरीके से प्रबंधन करने की इसकी क्षमता को प्रदर्शित करे। यह मान्यता है कि राजनीति का मिश्रित सार्वजनिक संस्कृति तथा नागरिक पहचान को परिदुष्कर बनाकर प्रति-संतुलित किए जाने की आवश्यकता है जो सांस्कृतिक विभेदों को पूरी तरह सम्मिलित कर दे। इस निष्कर्ष को टाला नहीं जा सकता है कि वे समस्याएँ वास्तविक हैं, जिनका बहुसंस्कृतिवाद प्रत्युत्तर देता है; तथा बहुसंस्कृतिवाद का कोई भी संतोषजनक विकल्प नहीं है।

14.4 ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद

इकाई 13 में, ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद की उत्पत्ति तथा अनिवार्यता की एक संक्षिप्त चर्चा प्रस्तुत की गई है। यह कहना पर्याप्त होगा कि पिछले दस वर्षों अथवा इसके आसपास ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद पर दिए जाने वाले व्याख्यानों में कमी आ गई है। वर्ष 1994 में, प्रधानमंत्री पॉल कीटिंग ने ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद को विश्व में श्रेष्ठतम होने की संज्ञा दी थी। वर्ष 2004 में हुए चुनावों में, लिबरल और नेशनल दलों ने दोनों ही ने चुनाव कार्यक्रमों में बहुसंस्कृतिवाद का कभी-भी उल्लेख नहीं किया था। वर्ष 2001 तक ऑस्ट्रेलियाई लेबर पार्टी की इस क्षेत्र में कोई भी नीति नहीं थी, परंतु इसके बाद इसने स्वयं एक "लघु लक्ष्य" बनने का निर्णय किया।

सामान्य तौर पर, एक नीतिगत संदर्भ के रूप में ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद के कम से कम तीन प्रमुख उद्देश्य थेः (i) समाज में सामाजिक सम्बद्धता सुनिश्चित करना, जोकि 100 से

अधिक देशों तथा 200 नृजातीय क्षेत्रों से आप्रवासन के परिणामस्वरूप अत्यंत विविध प्रकार के समूह बन गए हैं; (ii) आर्थिक क्षेत्र में बढ़ती हुई विविधता द्वारा सांस्कृतिक पूँजी का उपयोग करना तथा जिसे अर्थशास्त्री "उत्पादकता विविधता" के नाम से जानते हैं; तथा (iii) अंतसांस्कृतिक बातचीत तथा पारस्परिक मान्यता के आधार पर इसके नागरिकों के बीच वैश्विक अवचेतना को प्रोत्साहित करना।

यह परिवर्तन क्यों और कब आया? पिछले तीन दशकों की गैर-भेदभावकारी आप्रवासी नीति तथा बहुसंस्कृतिवाद के प्रभाव 21वीं शताब्दी के प्रारंभ में स्पष्ट हो गए ऑस्ट्रेलिया सही मायनों में विविधता वाला देश बन गया। वर्ष 2002-03 में, आप्रवासियों की संख्या कुछ चौरानवे हज़ार थी, तथा लगभग 28 हज़ार पारिवारिक पुनर्मिलन के आवेदक थे, 35 हज़ार कुशल श्रेणी के अंतर्गत आए, लगभग 16 हज़ार से अधिक न्यूजीलैंड के थे तथा 10 हज़ार से कुछ कम शरणार्थियों आदि जैसी मानवीय योजनाओं के अंतर्गत आए थे। विदेशों में पैदा हुए ऑस्ट्रेलियाइयों का अनुपात भी स्थिर रहा। सन् 1996 और सन् 2001 की अवधि के दौरान नए समुदाय, प्रायः शरणार्थियों से बनाए गए। ऐसे लोगों की संख्या बढ़ गई जो स्वदेश में अंग्रेजी के अलावा अन्य भाषाओं का प्रयोग करते थे। सर्वाधिक तेज़ी से बढ़ते हुए आप्रभाषी भाषाई समूहों में सर्वप्रथम स्थान था अफ्रीका से आए शोना-भाषा लोग, तथा इनके बाद थे अफ्रीकी-भाषी और सोमाली। संख्या भले ही कम हो सकती है, परंतु छः में से चार भाषाई समूह, जिनकी संख्या दोगुनी हो गई थी, अफ्रीका में हैं। जनगणना के आँकड़ों में, निम्नलिखित धार्मिक समूहों ने अपनी संख्या में दोगुने से भी अधिक वृद्धि की, थी – मैरोनीटे और मेलकाइट कैथोलिक; तथा अल्बेनियाई ऑर्थोडॉक्स। एनिओच ऑर्थोडॉक्स की संख्या में 90 प्रतिशत, बौद्धों में 80 प्रतिशत; हिंदुओं में 42 प्रतिशत तथा इस्लाम के लोगों में 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

ऑस्ट्रेलिया की शक्तियों के संवैधानिक विभाजन में, आप्रवासन एक संघीय विषय है, जबकि राज्यों को कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि के लिए जिम्मेदार बनाया गया है। अनेक विषयों जैसे सांस्कृतिक विकास और मानव अधिकारों, के विधान बनाए गए हैं और उन्हें समीपवर्ती प्रभाणित किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर, अनेक मानवाधिकार नियमों को मुख्य रूप से मानवाधिकारों और समान अवसर आयोग (Human Rights and Equal Opportunity Commission; HREOC) के माध्यम से प्रशासित किया जाता है। मानवाधिकारों और समान अवसर आयोग की न्यायिक शक्तियाँ पिछले वर्षों के दौरान काफी कम की गई हैं; तथापि, इसका परामर्शी और शैक्षिक संकेंद्रण अत्यंत मजबूत बना है। बहुसंस्कृतिवाद से प्रासंगिक संघीय विधि प्राथमिक रूप से जाति और नृजातीयता के आधार पर व्यक्तियों के विरुद्ध भेदभाव के निवारण पर निर्देशित हैं, तथा घृणापूर्ण भाषण द्वारा उत्पीड़ित समूहों और व्यक्ति विशेषों के लिए सिविल उपचार प्रदान करते हैं। तथापि, घृणापूर्ण भाषणों के विरुद्ध कोई आपराधिक प्रतिबंध नहीं है।

कनाडा के विपरीत, ऑस्ट्रेलिया में कोई भी बहुसंस्कृतिवाद विधान नहीं है तथा सांस्कृतिक विभेदों को बनाए रखने तथा उनकी अभिव्यक्ति के लिए कोई राष्ट्रीय अधिकारिक ढाँचा नहीं है। तथापि, ऐसी अनेक संस्थाएँ हैं, जो बहुसंस्कृतिवाद से व्यवहार कर रही हैं, तथा जिसमें बहुभाषाई रेडियो तथा टेलीविजन प्रसारण सेवाएँ शामिल हैं।

प्रत्येक राज्य में इसका स्वयं का मानवाधिकार तथा नृजातीय-कार्य विधान है। बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम स्वीकार करने वाला न्यू साउथ वेल्स पहला राज्य है। इसने बहुसंस्कृतिवाद एनएसडब्ल्यू के लिए समुदाय संबंध आयोग गठित करने का निर्णय लिया है (एनएसडब्ल्यू)।

14.5 "ऑस्ट्रेलियाई" बहुसंस्कृतिवाद

विविधता ऑस्ट्रेलियाई जीवन का एक तथ्य बन चुकी है, तथा अधिकांश ऑस्ट्रेलियाई हर रोज इसे देखते हैं, तथा इसके साथ जीवन व्यतीत करते हैं। तथापि, हाल के वर्षों में बहुसंस्कृतिवाद पर बहस विभिन्न दिशाओं में बढ़ गई है। एएलपी ने अनिवार्य रूप से इसकी प्रतिबद्धता को अवधारणा पर छोड़ दिया है तथा वर्तमान में उसके पास कोई सुस्पष्ट नीति परिभाषित नहीं है। जॉन हावर्ड के अधीन शासक लिबरल-नेशनल गठबंधन में बहुसंस्कृतिवाद के संस्करण को परिभाषित किया है, जिसमें विद्यमान सांस्कृतिक पारंपरिक-क्रमबद्धता को पुनः प्रवर्तित किया गया है; सांस्कृतिक परिरक्षण के लिए सरकारी सहायता को कम किया गया है तथा आगे आने वाले समय में एकीकरण और अंतरआस्था सम्बन्धी बातचीत को बल प्रदान किया गया है।

वर्ष 1999 में, संघीय सरकार ने "ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद" शब्द को अंगीकृत किया था तथा जिसमें "ऑस्ट्रेलियाई" शब्द पर बल प्रदान किया गया था तथा ऑस्ट्रेलियाई सामाजिक सम्बद्धता और निष्ठा के महत्त्व को सुनिश्चित किया गया था। "ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद" के तीन पहलू महत्त्वपूर्ण हैं।

i) **सांस्कृतिक परिरक्षणः** ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद प्रमुख समाज तथा आने वाले नृजातीय और नस्लीय अल्पसंख्यकों के बीच एक ऐतिहासिक समझौता है। यह अपरिहार्य बनाता है कि जीवन के अधिकार, कार्य और ऑस्ट्रेलिया में समृद्ध होने के लिए प्रयास करने में आप्रवासी लोगों को ऑस्ट्रेलियाई राज्य व्यवस्था के प्रति अपनी प्रारंभिक सत्यनिष्ठा प्रदर्शित करनी होगी। इसको मान्यता देते हुए राज्य व्यवस्था स्वीकार्य विविधता के मान्य पैटर्न के भीतर उनके सांप्रदायिक मूल्यों तथा भाषाई पसंदों को विधि मान्यता देगी। 1990 के दशक तथा आज के समय के बीच एक उल्लेखनीय परिवर्तन यह है कि जबकि सरकारें सांस्कृतिक परिरक्षण के लिए कतिपय निधियाँ उपलब्ध करा रही थीं, उन्होंने अब इसमें कमी कर दी है। सरकारी दृष्टिकोण आज यह है कि सांप्रदायिक मामले नीति के नहीं, रुचि के मामले हैं; तथा समुदाय, यदि वे ऐसा चाहें, ऐसे कार्यों के लिए अपने स्वयं के संसाधन पैदा और उत्पन्न पैदा कर सकते हैं।

ii) **धर्म और सार्वजनिक जीवनः** 1990 के दशक में, बहुसंस्कृतिवाद पर चर्चा में धर्म केंद्रीय मुद्दा नहीं था। धार्मिक विविधताएँ नृजातीय विभेदों का हिस्सा थीं। तथापि, 9/11 के बाद से, धार्मिक विभेदों को महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में देखा गया है। 400,000 मुसलमानों ने सामाजिक विद्वेष की बढ़ती हुई भावना का अनुभव किया है, जिसमें से अधिकांश पश्चिम एशिया के मुसलमान समुदायों तथा उनपर केंद्रित है जो विशिष्ट मुसलमानी वस्त्र पहनते हैं। बाली पर बमबारी जैसी घटनाओं ने मुसलमानों के विरुद्ध हिंसक घटनाओं को जन्म

दिया है। इससे भी अधिक विषम स्थिति है यह कि हिंसा तथा संगठित अपराधों की स्थानीय समस्याएँ धार्मिक विवादों का आयाम ग्रहण कर लेती हैं। मुद्दों ने अंतरआस्था बातचीत पर तथा सरकार और समुदाय द्वारा प्रायोजित अंतसांस्कृतिक सहयोग एवं एकता के सांकेतिक प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित किया है। सरकारी तथा समुदाय संगठनों के बीच ऐसे सहयोग की प्रक्रिया में बेरोज़गारी तथा असमानता की गहरी समस्याओं की ओर भी कुछ ध्यान तो दिया ही जाना चाहिए।

iii) **आर्थिक रूपांतरण तथा मानव पूँजीः** अपने मौलिक अर्थ में, बहुसंस्कृतिवाद का तात्पर्य है कि सरकारें नृजातीय तथा नस्लीय आधारों पर भेदभाव तथा आर्थिक असमानता को पैदा होने की अनुमति नहीं देगी। हाल के वर्षों में, इस प्रकार की वचनबद्धता दी गई है। बाज़ार की अर्थव्यवस्था के नीति-निर्धारण पर हावी होने के साथ, अनेक नृजातीय समूह, जो गरीबों के रूप में तथा शिक्षा एवं कौशल के निम्न स्तर के साथ ऑस्ट्रेलिया में हासिल हुए हैं, निम्न आय, उच्च-बेरोज़गारी और हिंसा प्रभावित निम्न-वर्गों के रूप में संकेद्रित होते जा रहे हैं।

एक वांछित सामाजिक नीति के रूप में उदारवादी बहुसंस्कृतिवाद का पतन हुआ है, हालाँकि राष्ट्रीय संकेद्रित मूल्यों और निष्ठा की प्रतिबद्धता के बीच नृजातीय विविधता के समर्थन में एक बड़ा बहुमत विद्यमान है। ये राष्ट्रीय केंद्रित मूल्य क्या है? मोटे तौर पर, ये बहुमत वाले एंग्लो-सेट्लिक अनुभवों लोकतंत्र, वैयक्तिक अधिकार तथा ईसाई लोकोचारों से लिए गए हैं। इन नृजातीय समूहों, जो अर्थव्यवस्था के हाशिए पर हैं, इनके लिए सार्वजनिक नीति तथा हाल के वर्षों के प्रवचनों ने केवल अंतर्सामूहिक विद्वेष, ग़ैर-लाभ तथा भेदभाव के उच्च स्तरों में वृद्धि की है तथा अस्वीकृति के भय के लिए सांस्कृतिक सीमाओं के पार संपर्क स्थापित करने के प्रोत्साहनों के स्तर को कम किया है।

निष्कर्ष के तौर पर, हम कह सकते हैं कि "ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद" रूढ़िवादी हैं तथा सांस्कृतिक विभेदों को नियंत्रित करता है। ऐसे दिखावे के तथा नीतिगत संदर्श ऐसी ऑस्ट्रेलियाई राज्य व्यवस्था निर्माण करते हैं, जो दक्षिणास्तिक और सामाजिक दृष्टि से असंयोजित हैं। सामाजिक सम्बद्धता में वृद्धि करने के स्थान पर, "ऑस्ट्रेलियन बहुसंस्कृतिवाद" सामाजिक तनाव और ग़ैर-सौहार्द पैदा कर रहा है तथा राज्य व्यवस्था एक उत्पीड़ित दृष्टिकोण के साथ मतभेद तथा अंतरों को नियंत्रित करने के लिए अधिकाधिक उपाय कर रही है, ऐसा शरणार्थियों के साथ इसके व्यवहार से तथा इसके सीमावर्ती या क्षेत्रीय समुद्र में अवैध आगमनों से, तथा उस अविश्वास से स्पष्ट है जिससे मुसलमान समुदायों को आज देखा जाता है।

14.6 सारांश

बहुसंस्कृतिवाद 1960 के दशक में उत्पन्न हुआ था तथा 1970 के दशक तक ऑस्ट्रेलिया और कनाडा, दोनों ही ने स्वयं को बहुसंस्कृतिक राष्ट्र घोषित कर दिया था। 1990 के दशक के अंत तक, बहुसंस्कृतिवाद का विचार आप्रवासी और ग़ैर-आप्रवासी समाजों में स्वीकृत हो गया था। तथापि, 21वीं शताब्दी के प्रथम दशक की शुरुआत से बहुसंस्कृतिवाद की अवधारणा एवं

नीतियाँ ख़तरे में हैं तथा ऐसा कहा जा रहा है कि 21वीं शताब्दी में विश्व में इसका कोई स्थान नहीं है। अनेक कारण जैसे सभ्यताओं के टकराव की भविष्यवाणी, 11 सितंबर का आतंकवादी हमला, बढ़ती हुई गरीबी (जिसका दोष आप्रवासियों पर मढ़ा गया) के दोष दिए गए, परंतु इनमें से किसी की भी संमीक्षा नहीं की गई। यदि ऐसे लोग हैं जो यह मानते हैं कि बहुसंस्कृतिवाद का प्रयोग पृथक्कीकरण को बनाए रखने तथा विविधता को अधिकतम बनाने के लिए किया जा सकता है, यह उनकी भूल है तथा ऐसी कोई अवधारणा नहीं है। बहुसंस्कृतिवाद को विकसित किया गया, क्योंकि एक अत्यधिक विविध समाज को सामाजिक रूप से एकीकृत करना था। इसलिए समाज की बुराइयों के लिए बहुसंस्कृतिवाद को दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए, परंतु उन कमियों की गहन समीक्षा की जानी चाहिए जो लोकतंत्र, अधिकारों तथा समानता के व्यवहारों में घुस गई हैं। संक्षेप में, जिस चीज की आवश्यकता है, वह बहुसंस्कृतिवाद को त्यागना अथवा उसका लघुकरण करना नहीं है, परंतु जैसा कि बिल काइम्लिका ने कहा है, "उदारवादी बहुसंस्कृतिवाद" जिसका उद्देश्य नृजातीय-सांस्कृतिक विविधताओं को स्थापित करना है। इस समय बहुसंस्कृतिवाद का कोई संतोषजनक विकल्प नहीं है।

एक ग़ैर-भेदभावपूर्ण आप्रवासी नीति के कारण, ऑस्ट्रेलिया वास्तव में विविधतापूर्ण बन गया है। आप्रवासन स्वयं एक संघीय विषय है, जबकि राज्य कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार हैं। कनाडा के विपरीत, ऑस्ट्रेलिया में कोई बहुसंस्कृतिवाद विधान नहीं है, तथा सांस्कृतिक अंतरों को बनाए रखने और उसकी अभिव्यक्ति के लिए कोई राष्ट्रीय अधिकार ढाँचा नहीं है। तथापि, ऐसी अनेक संस्थाएँ हैं जो बहुसंस्कृतिवाद से व्यवहार कर रही हैं। "ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद" के तीन मुख्य पहलू हैं – सांस्कृतिक परिरक्षण, धार्मिक विभेद (हाल ही में जन्मा) तथा आर्थिक असमानता के प्रति वचनबद्धता में "ह्रास। उदारवादी बहुसंस्कृतिवाद का एक वांछनीय सामाजिक नीति के रूप में पतन हुआ है, हालाँकि राष्ट्रीय केंद्रीय मूल्यों और निष्ठा के प्रति वचनबद्धता के भीतर नृजातीय विविधता के पक्ष में एक उल्लेखनीय बहुसंख्यक समर्थन विद्यमान है। ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद ने सामाजिक तनाव को जन्म दिया है तथा वह एक भवपीड़क दृष्टिकोण के माध्यम से मतभेदों को नियंत्रित करने का प्रयास कर रहा है।

14.7 अभ्यास

1) बहुसंस्कृतिवाद के विचार का जन्म कैसे हुआ? क्या यह एक देश से दूसरे देश में भिन्नता रखता है?

2) 21वीं शताब्दी में बहुसांस्कृतिक नीतियों की आलोचना क्यों की जा रही है?

3) ऑस्ट्रेलिया में बहुसंस्कृतिवाद का विकास कैसे हुआ? ऐसे अनिवार्य कारक क्या रहे हैं, जिनके अंतर्गत इसने कार्य किया है?

4) 'ऑस्ट्रेलियाई बहुसंस्कृतिवाद' की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं?

14.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एण्ड्रयू जैकुबोविक्स *"मल्टीकल्चरिज्म इन ऑस्ट्रेलियाः एपोजी और नाडिर ?"*

विलकिम्लिका, *"दि अनसर्टेन फ्यूचर ऑफ मल्टीकल्चरिज्म ''*,

वेल्ट बाडेर, *"डाइलेमाज ऑफ मल्टीकल्चरिज्मः फाइंडिंग और लूजिंग आवर वे ?"*

रेनर बॉबौक, *"इफ यू से मल्टीकल्चरिज्म इज द रांग आंसर, देन वाट वाज द क्वेश्चन यू आस्कड ?"*

कीथ ब्रैंटिंग एण्ड विल किम्लिका, *"मल्टीकल्चरिज्म एण्ड द वेलफेयर स्टेट एन एमर्जिंग डिबेट"*

बी.हास डेल्टाल, *"ऑफ 'मिडल ईस्टर्न एपीरेंस' पुलिस एण्ड मुस्लिम कम्युनिटीज इन ऑस्ट्रेलिया"*;

स्टीफन केर्क्याशार्लन, *"मल्टीकल्चरिज्म इन ऑस्ट्रेलियाः फाइंडिंग ऑर लूजिंग आवर वे ?"* कनाडियन डाइवर्सिटी, खण्ड 4, सं. 1, विंटर 2005, पृष्ठ 15-18; 82-85; 86-89; 90-93; 103-106; 107-108; 109-112.